[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3681
INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

बुन्देलखण्ड के कलासाधक : किशन सोनी के चित्रों का रंगसंयोजन

गरिमा पाठक
जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर

बुन्देलखण्ड के कला साधक श्री किशन सोनी जी का जन्म उ.प्र. के झांसी जिले में 19 नवम्बर सन् 1958 को हुआ। इनके पिता जी श्री सूरज प्रकाश सोनी मूलतः राजस्थानी थे लेकिन कई वर्षों से झांसी में ही रह रहे हैं इनकी माताजी का नाम श्रीमति चंदा सोनी है। सन् 1975 में सोनी जी ने हाई स्कूल की परीक्षा पास की लेकिन परिस्थितिवश वे आगे नहीं पढ़ सके। आज उनके व्यक्तित्व, व्यवहार और ज्ञान को देखकर कोई भी यह नहीं सोच सकता कि उनकी संस्थागत शिक्षा के कुछ चरण बाकी रह गये है और वह इस तथ्य के भी साक्षात् उदाहरण है कि 'कला किसी भी स्कूली शिक्षा व ज्ञान की मोहताज नहीं'
बचपन से ही सोनी जी ने अपने पिता जी को वस्त्रों को अलंकृत करते हुए देखा अतः उनके अन्दर आनुवांशिकी गुणो के अनुसार एक कलाकार के गुण स्वतः ही आ गए । इनकी माता जी ने इनका मनोबल हमेशा बढ़ाए रखा। सोनी जी ने बालपन में ही अपने पिता जी ने कढाई का काम सीख लिया और धर्नाजन हेतु उनकी सहायता करने लगे परन्तु इस काम में इनका मन नहीं लगा। तब इन्होने अपनी माता जी की प्रेरणा से, चित्रकला की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इन्होने अपना प्रथम व्यक्ति चित्र अपनी 'नानी मां' का बनाया। इस समय इनकी आयु महज 14 वर्ष की थीं।
कला क्षेत्र में सोनी जी के कार्य प्रेरक इनके माता–पिता एवं ईश्वर की आराधना है। कला जगत के महान कलाकार राजारवि वर्मा एवं एम.एम. पंडित को इन्होने अपना आदर्श माना और उनके अनुसार ही आधुनिक भारतीय भावपूर्ण यथार्थ शैली चित्रण को अपनी कला का मुख्य ध्येय बनाया। सोनी जी के श्रंगारिक चित्रों में श्री राजारवि वर्मा जी का एवं व्यक्तिचित्रों पर एस.एम. पंडित जी के चित्रों का प्रभाव दिखाई देता है।
सोनी जी के अनुसार वर्तमान समय में भारतीय कला वस्तुनिरपेक्ष कला की ओर अग्रसर हो रही है। जिससे भारतीय कला में भाव प्रधानता एवं रस प्रधानता आदि गुणों का ह्रास हो रहा है। अतः सोनी जी भावपूर्ण अलंकरणात्मक शैली में चित्रण कर भारतीय कला के मूलगुणों को लुप्त होने से बचाना चाहते है। उन्होने स्वयं कहा है कि ''मैं ऐसे चित्रों का चित्रण करना चाहता हूँ जिनको व्याख्या की आवश्यकता न पड़े।'' इनको यूरोपीय यथार्थवादी चित्रकारों ने भी आकर्षित किया। जिसका प्रभाव इनके चित्रों में स्पष्ट दिखाई पड़ता है।
श्री किशन सोनी जी बालपन से ही कला साधना में लीन हो गये थे। इनको कला क्षेत्र में अपनी पहचान सन् 1982 में मिली जब इन्होने (माइक्रो पेन्टिग) अति लघु चित्र की रचना करना शुरू किया। अति लघु चित्रों में चावल के एक दाने पर लिखा ''गायत्री मंत्र'' व मंगूफली के आधे भाग पर 'रामदरबार' का अंकन विशेष प्रसिद्ध है।
इन्होने सन् 1970 से अपने स्टूडियों में कार्य करना प्रारंभ किया और लगभग 3000 के करीब व्यक्ति चित्रों और 34 चित्र संयोजनो का सृजन किया। वर्तमान समय में ये आर्टक्लब, पुलिन्द कला दीर्घा और सूर्यान्शी चित्रशाला आदि शिक्षण संस्थानों के अर्न्तगत कार्य कर रहे है। और अनेक छात्र छात्राओं को कला शिक्षा प्रदान कर रहे है।
किशन सोनी जी के चित्रों की विषयवस्तु मुख्य रूप से प्रेम और सौन्दर्य पर आधारित है। इनके चित्रों में श्रंगार रस की प्रधानता है जिनमें राधाकृष्ण, विश्वामित्र–मेनका, इन्द्रजीत–रायप्रवीन, मधुकरशाह–गनेशकुंवर आदि के अमर प्रेम के दर्शन होते है एवं पौराणिक व धार्मिक चित्रों का भी चित्रण किया है जिनमें रामसीता, रामदरबार, कृष्ण लीलाएं देवी लक्ष्मी, सरस्वती आदि को भी चित्रित किया है। इन्होने नारी को अद्वितीय सौन्दर्यशक्ति एवं सौभाग्य के साथ दर्शाया है। इसके अलावा इन्होने अनेक ऐतिहासिक चित्र जिनमें रानी लक्ष्मीबाई तथा झांसी .ओरछा के राजा–महाराजाओं के व्यक्ति चित्र प्रसिद्ध है।
सोनी जी ने मुख्यतः भावपूर्ण अलंकरणात्मक शैली में चित्रण किया। जिसमें भारतीय कला के अनुसार यथार्थता एवं रस प्रधान का भी समावेश है। इनकी नारी–आकृतियों के भराव लिये हुए मुखमण्डल व बडे–बडे कटीले नयन दर्शको का मन मोह लेते है। इनकी चित्राकृतियों में संतुलन, लय, उचित विशेषकर चमकीले एवं कोमल रंगो का प्रयोग किया है।वस्त्रों एवं आभूषणों का चित्रण भी सुन्दर और वास्तविक है।
इनकी प्रमुख कला में राधाकृष्ण मिलाप इन्द्रजीत और रायप्रवीन तथा महारानी गनेश कुवर का चित्र बहुत प्रसिद्ध है।
राधाकृष्ण मिलाप नामक चित्र तैल रंगो द्वारा कैनवास पर चित्रित है। इसका आकार 48 वाई 60 इंच है। यह चित्र जयपुर के एक निजी संग्रहालय में सुरक्षित है। चित्र इतना सुन्दर बना है कि दर्शक इसमें खो जाता है। राधा और कृष्ण जी का स्वरूप बहुत ही सुन्दर है। चित्र में कृष्ण और राधा यमुना के किनारे और कुटुम्ब के वृक्ष के नीचे बैठे हुए प्रेमालाप करते चित्रित किये गये है। कृष्णा और राधा अद्भुत और आलौकिक सौन्दर्य के पयार्य माने गये है। श्री कृष्णा को श्याम वर्ण और राधा को गौर वर्ण में चित्रित किया गया है। चित्र में कृष्ण राधाजी के सौन्दर्य को निहारते प्रतीत होते है। बासुरी श्री कृष्णा राधा जी पर पगड़ी, कन्धे पैर में तोरड़, हाथ में चूरा एवं गले में कानो में कुण्डल, पैर में तोरड, हाथ में चूरा एवं गले में हार व माला से धारण किये हुय है। राधाजी काले रंग का लहंगा, पीले रंग की चुनरी तथा लाल रंग का ब्लाउज पहनें आभूषणों से अंलकृत

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

तथा करधनी पहने चित्रित है। श्री कृष्णा का मुख सवाचश्म तथा राधाजी का एकचश्म में अंकित है। श्री कृष्ण, राधाजी को निहारते हुए एवं उनकी ठोढी को अपने बाएं हाथ से ऊपर उठाते प्रतीत होते है एवं राधाजी अपने घुटने को हाथो से पकड़े हुए व नेत्रों को झुकाए हुए चित्रित है। पृष्ठभूमि में घने वन, नदी आदि प्राकृतिक दृश्य हैं। वृक्षों पर शुक आदि पक्षी बैठे हुए है।

'प्रणय' नामक चित्र महान नर्तकी राय प्रवीन और इन्द्रजीत सिंह जूदेव के प्रेम पर आधारित है। रायप्रवीन अपूर्व सुन्दरी और महान् नृत्यांगना थी और इन्द्रजीत सिंह जूदेव, जो ओरछा नरेश वीर सिंह जूदेव के भाई थे। रायप्रवीन इन्द्रजीत को पतितुल्य मानती थीं। एक बार अकबर ने राय प्रवीन के सौन्दर्य की चर्चा सुनकर उनको मुगल दरबार में बुलवाना चाहा और यह संदेश ओरछा नरेश को भेजा दिया। ओरछा नरेश ने भाई इंद्रजीत को आदेश दिया कि रायप्रवीन को मुगल दरबार ने भेजा जाए। आदेशानुसार इंद्रजीत राय प्रवीन को लेने जाते है और स्वयं उनके मोहपाश में बंधकर वहीं रूक जाते है। चित्र में पर्दों का अंकन बहुत ही सुन्दर है। चित्र श्रृंगार रस से ओतप्रोत है तथा चित्र में शयन कक्ष जैसा वातावरण दिखाई पड़ता है। आकृतियां लयात्मक और अनुपात पूर्ण है। नृतकी का कक्ष होने के कारण वाद्ययंत्र रखे दिखाई पड़ते है। चित्र में गुलाबी, लाल, हरे, बैंगनी, सफेद, नीले, पीले आदि चमकदार रंगो का प्रयोग हुआ है। चित्र का आकार 48 वाई 60 इंच है तथा लखनऊ में है।

महारानी गनेश कुवर के चित्र ओरछा की महाराजा मधुकर शाह की पत्नी महारानी गनेश कुवर का चित्रण किया गया है। चित्र का आकार 56 + 48 इंच है। चित्र तैल माध्यम में कैनवास पर चित्रित है। महारानी गनेश कुवर का रुप बहुत मोहक है। बुन्देली क्षेत्रीय परम्परानुसार वेशभूषा धारण किये हुए हे। इस चित्र में सोनी जी ने पुराने समय के बुन्देली आभूषण (ठुसी, लरबरी, तिधाना, बेलचूडी, टका) आदि को स्वयं देखकर चित्रित किया है। महारानी हाथों में पूजा की थाली लिये हुए है। जिसमें दीपक, कलश, नैवेध, फूल , प्रसाद आदि पूजन सामग्री स्पष्ट दिखाई दे रही है। रानी के मुख पर अपने श्री राम के लिए वात्सल्य व श्रद्धा का भाव है। पृष्ठभूमि में महल के कक्ष का दृश्य है वैदिक परम्परा के अनुसार ब्रम्हमुहुर्त में इष्ट देव के दर्शन को शुभ व विशिष्ट फलदेय माना जाता है।

सोनी जी के चित्रों का रंग संयोजन अद्वितीय एवं आर्कषक हैं। इनके चित्रों की रंग संयोजना में नवीनता के साथ यथार्थवादी शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। सोनी जी ने चित्रों में प्रयोग किए गए रंगों के भावनात्मक प्रभाव पर विशेष ध्यान दिया हैं। इन्होंने चित्रों में विशेषकर नारी पर आधारित चित्रों में लाल, नारंगी, गुलाबी आदि रंगों का अधिकाधिक प्रयोग किया है। ये रंग मनोवैज्ञानिक प्रभाव के आधार पर उत्तेजना, प्रेम, प्रसन्नता, उल्लास, क्रान्ति, क्रोध, ऊष्मता आदि के प्रतीक है।1 भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में लाल रंग सौभाग्य का सूचक माना जाता है। जो नारी को पूर्णत्व प्रदान करता है। सोनी जी ने अपने चित्रों में नारी को सौभाग्यवती दर्शाया है। लाल रंग के माध्यम से श्रंगार रस की निष्पत्ति होती है। अतः इसे गर्म रंगों की श्रेणी में प्रथम स्थान पर रखा गया है। भारतीय दर्शन में नारी को प्रेम, दया, ममता, करूणा, क्रान्ति, क्रोध, साहस एवं प्रसन्नता आदि गुणों से परिपूर्ण बताया गया है, एवं लाल रंग भी प्रेम, क्रान्ति, साहस उत्तेजना आदि का सूचक है। अतः इस कारण भी लाल रंग को नारी के सौभाग्य का सूचक माना जाता है।6

प्रत्येक चित्रकार का अपना एक पंसदीदा वर्ण होता है। जो उनके चित्रों की पहचान का कार्य करता है। अर्थात उस रंग प्रयोग चित्रकार द्वारा अधिकाधिक रूप से किया जाता है। सोनी का पंसदीदा रंग हरा (सैपग्रीन) हैं। जिसकी रंगते छाया–प्रकाश के साथ इनके चित्रों में दिखाई देती हैं। इनके चित्रों में प्राथमिक रंगों का प्रयोग मुख्यता हुआ है। रंगों की सघनता को कोमलता के साथ प्रयोग में लाया गया है। जिससे चित्रों की रंगत में कोमलता का प्रभाव आता है, एवं चित्र नेत्रों को चुभन न देते हुए कोमलता का अहसास कराते हैं।

वर्ण और प्रकाश का अनिवार्य सम्बन्ध माना जाता है। 2 प्रकाश से ही वर्ण का अस्तित्व है प्रकाश को दर्शाने के लिए छाया को दर्शाना भी आवश्यक है। सोनी जी के चित्रों में छाया–प्रकाश का मिश्रण बहुत सन्दर है। सोनी जी ने अधिकतर चित्रों को तैल माध्यम से बनाया। छाया–प्रकाश को बड़ी कोमलता के साथ मिश्रित किया है जिससे चित्रों मे कोमलता एवं सजीवता आती है।3 सोनी जी प्रारंम्भिक रेखांकन हरा (सेपग्रीन) एवं कत्थई रंगों से करते हैं। अलसी एवं तारपीन के तैलों के माध्यम के साथ रंगों को कम से कम तीन पतली परतों में लगाते हुए मिश्रित करते जाते हैं। इन्होंने मानवीय आकृतियों में भारतीय जलवायु एवं प्रजाति के अनुसार त्वचावर्ण (त्वचा रंग) को बनाया जिसका प्रभाव चित्रों को और अधिक सुन्दर बनाता एवं सजीव बनाता है। सोनी जी त्वचावर्ण के लिए मुख्यतः पीला (यलो ऑकर), लाल (वरमीलियन) , सफेद, हरा (सैपग्रीन) आदि रंगों को मिश्रित करते हैं।

वर्ण कलाकृति का सबसे अधिक सार्थक वर्णात्मक तत्व होता है। हमारे मनोविकारों को सीधे प्रभावित करने के कारण यह सर्वाधिक व्यंजक भी है। रंगों के अच्छे प्रयोग से कलाकृति में आश्चर्य जनक प्रभाव आ जाता है।4 जो महत्व मानव जीवन में भावों का है। उसी प्रकार का महत्व कलाकृति में रंगों का होता है। सोनी जी चित्रों की रंग संयोजना में भारतीयता संस्कृति के दर्शन स्पष्ट रूप से होते हैं। इनके ऐतिहासिक चित्रों में वस्त्रों, आभूषणों का अंकन एवं रंगाकन सजीव है तथा उस समय के ऐश्वर्य का भी परिचायक है। सोनी जी ने अपने चित्रों को यथार्थवादी शैली में चित्रित किया। यथार्थ और प्रकृति का गहरा

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

का सम्बन्ध है। इसी कारण सोनी जी के चित्रों में हरे रंग (सैपग्रीन) की अधिकता है। एवं चित्रों की रंगत में विशेषकर नारी परिधान एवं श्रृंगार में लाल रंग का प्रयोग से प्रतीकात्मकता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।5 श्री किशन सोनी जी के चित्रों की रंग संयोजना में शुद्धता , कोमलता, यथार्थता, सजीवता, प्रतीकात्मकता आदि गुणों के दर्शन विशेष रूप से होते हैं।

सोनी जी 1999 से वर्तमान समय तक अनेक प्रदर्शनियों में अपने चित्रो को प्रदर्शित करते आ रहे हैं। सन् 1999 में नेहरु सेन्टर लन्दन में उत्कर्ष प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित प्रदर्शनीय में इनकी कृति इन्तजार को बहुत प्रशंसा मिली एवं किसी सौन्दर्य उपासक ने उस अनमोल कृति को खरीदा लिया। इन्होने जयपुर दिल्ली झॉसी आदि अनेक स्थानों पर एकल एवं समूह कला प्रदर्शनीय आयोजित की ।

इनके चित्रों का संग्रह क्षॉसी ग्वालियर नागपुर रेलवे स्टेशन एवं ओरछा व वात्सल्यग्राम (मथुरा) आदि धार्मिक स्थलें झॉसी लखनऊ, जयपुर आदि संग्रहालयों में सुरक्षित संग्रहित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 *नायर डॉ. एन चन्द्रशेखरन चित्रकला सम्राट राजा रवि वर्मा अभिषेक प्रकाशन दिल्ली, 2004*
2 *देसाई रणजीत राजा रवि वर्मा वाणी प्रकाशन 1993*
3 *अग्रवाल गिरिराज किशोर रूपांकन ललित कला प्रकाशन (अलीगढ) 2009*
4 *श्रोतिय डॉ. शुकदेव चित्रकला के मूलाधार 4 67, 132*
5 *श्रीवास्तव डॉ. ए.एल. भारतीय संस्कृति एवं शिल्प 5 142*
6 *बिरही डॉ. परशुराम शुक्ल बुन्देलखण्ड की संस्कृति मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 2009 6 21, 45*